चुनौतियों से पार पाने के लिए संवाद और विश्वास बहुत महत्त्वपूर्ण हैं

शिक्षिका अर्चना अरोड़ा से दीपक राय की बातचीत

दीपक : अर्चनाजी, अपनी शिक्षा और शिक्षक बनने की यात्रा के बारे में कुछ बताएँ?

अर्चना : मैं महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय ग्वार ब्रह्मणान में अध्यापिका हूँ। मेरा जन्म और पूरी शिक्षा जयपुर ज़िले में हुई है। मैं एक औसत छात्रा रही। आम बच्चों की तरह स्कूल जाना, और बँधी हुई ज़िन्दगी का हिस्सा बनना मुझे पसन्द नहीं था। आर्ट, यानी कला के कार्यों मेरी बहुत रुचि थी। चित्र बनाना, नृत्य करना, गीत गाना और कहानी पढ़ना मुझे अच्छा लगता था। इसके अलावा, मुझे डायरी लिखना भी पसन्द था। यह मेरे जीवन की विडम्बना ही रही कि जब कक्षा 9 में ऐच्छिक विषय चुनने की बारी आई तो मेरे चुने हुए विषयों, हिन्दी साहित्य, चित्रकला और होम साइंस, को मेरे माता-पिता ने मेरी अनुमति और इच्छा के विरुद्ध कॉमर्स विषय से यह समझते हुए बदलवा दिया कि औसत छात्रा होने के कारण मैं अपने चुने विषयों का अध्ययन स्वयं नहीं कर पाऊँगी। और कॉमर्स में मेरी बड़ी बहन और पिता के सहयोग से पढ़कर मेरी नैया पार लग जाएगी। यहाँ एक बात बताना ज़रूरी है कि मैंने अपने शैक्षणिक प्रदर्शन में हमेशा गणित विषय में ही मात खाई थी। यह एक तरह से गणित विषय से मेरी बेरुख़ी थी। गणित में ग्रेस मार्क्स से पास होने वाली मेरी जैसी छात्रा के लिए कॉमर्स विषय कैसे उचित था, यह मैं कभी समझ नहीं पाई। हाँ, यह ज़रूर समझ आया कि यह मेरे शैक्षणिक जीवन में एक हादसा था, और ऐसे हादसे बहुतों के साथ हुए होंगे, और अभी भी हो ही रहे हैं।

दीपक : आप शिक्षक ही क्यों बनीं? यह कैरियर के तौर पर आपका चुनाव था या रोज़गार की मजबूरी?

अर्चना : मेरी माँ एक अध्यापिका रही हैं। हिन्दी साहित्य में उनकी गहरी रुचि रही, और वही उनका अध्यापन का विषय भी रहा है। अतः शिक्षक बनने का विचार और सपना मेरे बचपन का ख़ास खेल रहा। स्कूल में प्रवेश से पहले ही मैंने अपनी माताजी के सहयोग से धाराप्रवाह हिन्दी पढ़ना सीख लिया था। इसी के चलते विद्यालय में शिक्षिका प्रायः मुझे ही मेरी कक्षा में अपने सहपाठियों को वर्णमाला सिखाने, और बाद में शब्द व पुस्तक पढ़ना सिखाने का काम सौंप दिया करती थीं।

शिक्षक बनने का एक कारण यह भी था कि कुछ विषयों में पढ़ाई में कमज़ोर होने के कारण जो मुश्किलें मैंने अनुभव कीं, मेरे मन में कहीं था कि यदि मैं शिक्षक होती तो अपने विद्यार्थियों के साथ वैसा व्यवहार न करती। मुझे होमवर्क करना पसन्द नहीं था। मैं समझती थी कि शिक्षक बनूँगी तो बच्चों को ऐसा होमवर्क दूँगी जिसे करने में उन्हें आनन्द आए, और वह उन्हें बोझ न लगे। जो बच्चे कमज़ोर हैं, उनको अतिरिक्त समय व ध्यान देकर, उनका अपमान किए बिना मैं उन्हें स्कूल में बने रहने के लिए पढ़ना-लिखना सिखाऊँगी। रोज़गार तो एक मुद्दा है ही, लेकिन शिक्षक बनने के लिए मेरे पास ये बहुत-से कारण और प्रेरणाएँ थीं।

दीपक : अपनी कक्षा के बारे में कुछ बताएँ। कैसी होती हैं कक्षा और कक्षा गतिविधियाँ? आप पाठ्यपुस्तक से इतर भी बाल साहित्य से जुड़ी चीज़ों का इस्तेमाल करती हैं क्या?

अर्चना : मेरी कक्षा का वातावरण आधे घण्टे में कई बार बदलता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि अभिवादन के बाद से ही शुरू होती हैं उनकी वे शिकायतें व इच्छाएँ, जो बच्चे मुझसे सुलझवाना चाहते हैं या मेरे साथ बाँटना चाहते हैं।

5-7 मिनट बाद मैं अपनी शिक्षक की भूमिका में आ जाती हूँ, और विषय के अध्यापन, होमवर्क की जाँच, जैसे कार्यों में लग जाती हूँ। बच्चों का आकलन करती हूँ और उसी के अनुरूप शिक्षण करती हूँ। इसी के साथ, आवश्यकता वाले बच्चों को निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण करवाती हूँ।

पुस्तकालय प्रभारी होने के कारण, मैं अपने विषय हिन्दी को रोचक बनाने के लिए पुस्तकालय की पुस्तकों का सहारा लेती हूँ। जो बच्चे किताब पढ़ना नहीं जानते, उन्हें कहानी पढ़कर सुनाती हूँ, और चित्र पठन का सहारा लेती हूँ। जो बच्चे पढ़ सकते हैं, वे अपनी इच्छानुसार पुस्तक लेकर पढ़ते हैं। कई बार कक्षा में किसी छोटी कहानी को नाटक के रूप में भी बच्चे अभिनीत करते हैं। कविताओं-कहानियों को गाकर, हावभाव के साथ बोलना, शब्द अन्त्याक्षरी करना, एबीएल किट से खोजना और पढ़ना, इत्यादि पाठ्यपुस्तक से इतर गतिविधियाँ रहती हैं। मेरा अनुभव है कि बाल साहित्य के साथ क्रियाकलाप से बच्चों की बच्चों का सीखना बेहतर हुआ है, और सामान्यतया पढ़ने-लिखने में उनकी रुचि बढ़ी है।

दीपक : अपनी कक्षा की शिक्षण प्रक्रियाओं में बच्चों की सहभागिता आप कैसे सुनिश्चित करती हैं?

अर्चना : शिक्षण में बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए मुझे अलग से कोई योजना नहीं बनानी पड़ती, बच्चों के साथ मेरा सम्बन्ध शिक्षक-शिक्षार्थी का है। मैं कभी उन्हें निर्देश भी देती हूँ और मिलकर भी काम करती हूँ। विद्यालय पहुँचने के बाद बच्चे प्रार्थना स्थल पर एकत्रित होते हैं, और प्रार्थना सभा के बाद उनसे प्रतिदिन कुछ संवाद किया जाता है। यह संवाद उनके शैक्षिक प्रदर्शन के साथ ही उनके स्वास्थ्य, अनुशासन, विद्यालय की व्यवस्थाओं में उनके सहयोग को लेकर भी किया जाता है। यहीं से बच्चों को प्रोत्साहन देना, निर्देशित करना, जैसे कार्यों के साथ उनसे जुड़ाव शुरू हो जाता है। विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए हमारे बीच का यही अनौपचारिक सम्बन्ध मेरे लिए सहायक सिद्ध होता है। कक्षा में विद्यार्थियों को उनके स्तरानुसार कार्य देना, उन्हें शिक्षण कार्य से जोड़ता है। सम्पूर्ण कक्षा को एक साथ कराई जाने वाली गतिविधियों में कठिन, मध्यम और सरल, सभी प्रकार के प्रश्नों व उदाहरणों द्वारा विषयवस्तु को स्पष्ट करना, सभी बच्चों को यह अहसास करवाता है कि वह भी कक्षा गतिविधियों का सक्रिय हिस्सा हैं। इन गतिविधियों में अन्त्याक्षरी करवाना, टीम बनाकर प्रतिस्पर्धी रूप से प्रश्नोत्तर करना, आदि कार्य होते हैं। इनमें सभी विद्यार्थी एकजुटता से अपनी टीम के कमज़ोर सदस्य को भी जीतने की भावना से सहयोग करते हैं। जो बच्चे विषयवस्तु को जल्दी समझ लेते हैं, मैं उनको स्वतंत्र रूप से ऐसे कार्य करने को देती हूँ जिनमें वह स्वयं चिन्तन करके निष्कर्ष निकालें, और कार्य करें। मध्यम समझ वाले विद्यार्थियों को अपने साथ लेकर मैं उनकी समझ को सुदृढ़ करने के कार्य भी देती हूँ। यह कार्ययोजना अच्छी और मध्यम समझ वाले बालकों को शिक्षण गतिविधियों में संलग्न रखती है, और कमज़ोर शैक्षिक स्तर वाले बालकों को अलग से कार्य करवाने के लिए मुझे समय भी मिल जाता है।

दीपक : क्या चुनौतियाँ आईं बच्चों की लर्निंग को बेहतर करने में; और आपने क्या कुछ किया उन चुनौतियों से पार पाने में?

अर्चना : ढेर सारी चुनौतियाँ आती हैं। कई बार वे व्यवस्थागत भी होती हैं। लेकिन एक गम्भीर चुनौती है, अभिभावकों को विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति जागरूक करना।

हमारे विद्यालय में प्राय: वे बच्चे आते हैं जिनके माता-पिता बच्चों की शिक्षा पर विद्यालय भेजने के अलावा कोई और व्यय नहीं करना चाहते या कर नहीं पाते। अर्थात, बच्चों ने विद्यालय में क्या सीखा, उनको समय देना, उनको नियमित और समय पर विद्यालय भेजना, आदि के बारे में अभिभावकों की कोई ख़ास रुचि दिखाई नहीं देती है। सीखने में ज़्यादा समय लेने वाले बच्चों के साथ सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वे यह धारणा बना लेते हैं कि वह सीख ही नहीं सकते। उनकी यह धारणा अपने-आप नहीं बनती। उनके घर वाले और विद्यालय में कई बार शिक्षक भी

बार-बार सिखाकर जब कोई परिणाम नहीं पाते तो उन्हें उनके हाल पर छोड़ देते हैं। ऐसे विद्यार्थी अकसर मुझे चुनौती लगते हैं। यहाँ मैं एक अनुभव बाँटना चाहूँगी।

तीन बहनें हमारे विद्यालय में पढ़ रही थीं। दोनों बड़ी बहनें पढ़ाई में बेहतर थीं, लेकिन सबसे छोटी बहन बुनियादी पढ़ना-लिखना व संख्याएं भी नहीं सीख पा रही थी। सभी अध्यापक और उसके परिवारजन यह सुनिश्चित कर चुके थे कि उसका कुछ नहीं हो सकता। उसके माता-पिता का कहना था कि समय के साथ वह बालिका भी उग्र और झगड़ालू हो गई थी। कक्षा और विद्यालय के सभी बच्चे उसकी हँसी उड़ाते थे। उसके झगड़ालू और मारपीट करने के स्वभाव के कारण शिक्षकों ने भी उसपर ध्यान करना बन्द कर दिया था। विद्यार्थियों के साथ मेरे अनौपचारिक बातचीत करने के स्वभाव के कारण वह बालिका अकसर मुझसे अपनी पसन्द-नापसन्द की बातचीत करती। बातचीत में, मैंने जाना कि जैसे सब उसे नापसन्द करते हैं, वैसे ही वह भी सबको नापसन्द करती है। मुझे उसमें एक ऐसी बालिका दिखने लगी, जो गाली-गलौच के पीछे अपनी कमज़ोरी को छुपाती थी। मैंने उसे पढ़ाने-लिखाने का मन बना लिया। अपने ख़ाली कालांश में, मध्याह्न भोजन के बाद, और कई बार छुट्टी के बाद भी कुछ देर रुक कर मैंने उसे पढ़ाना शुरू किया। उसका बार-बार भूलना मुझसे ज़्यादा मेरे साथी शिक्षकों और प्रधानाध्यापक को अखरता था। वह अकसर कहते कि क्यों अपना दिमाग़ इसपर खपा रही हो। वे कभी मेरा मज़ाक़ भी बनाते कि यह इस लड़की को कलेक्टर बनाकर ही छोड़ेगी। इन सब बातों को मुझसे ज़्यादा उस बच्ची ने चुनौती के रूप में लिया। देर से ही सही, मेरी मेहनत, उस बच्ची का मुझपर विश्वास, और उसकी ख़ुद की लगन रंग लाने लगी। पहले वर्ण, फिर शब्द और फिर वाक्य, वह अटक-अटक कर पढ़ने लगी थी। यह सब उसने कक्षा 7 में सीखा। हालाँकि, शुद्ध लेखन और परीक्षाओं में याद करके उत्तर लिखना उसके लिए अभी भी दुरूह था। पर अब उसे भी सबको दिखाना था कि वह कर सकती है, और उसने किया। आज वह कक्षा 12वीं की छात्रा है।

मेरा यह मानना है कि चुनौतियों से पार पाने के लिए संवाद और विश्वास बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, चाहे वह अभिभावकों के साथ हो या विद्यार्थियों के साथ।

दीपक : बच्चों के साथ काम कैसे करना है, यह कैसे जाना-सीखा?

अर्चना : अनुभव से। जब शिक्षक के रूप में विद्यालय ज्वॉइन किया, तब से लेकर अब तक बच्चों में सीखने को लेकर जो समस्याएँ हैं, उनके पैटर्न को समझा। ज़्यादातर बच्चों के परिवारों में शिक्षा को लेकर गम्भीरता नहीं होना मूल समस्या है। इसके लिए उनके अभिभावकों से बात कर उनको बच्चों की शिक्षा के प्रति और विद्यालय में उनकी नियमित उपस्थिति पर जागरूक किया। अपने अनुभव से ही मैंने यह जाना कि शिक्षण के दौरान बहुत ज़्यादा उदारवादी अथवा सख़्त दृष्टिकोण बच्चों को सीखने से दूर करता है। यहाँ मेरे बचपन के अनुभव भी काम आए। मैं जानती थी कि कक्षा में एक मोटिवेटेड बच्चा क्या अनुभव करता है, और एक उपेक्षित बच्चा क्या। मेरे अन्दर जो एक बच्चा है उससे मैंने बहुत कुछ सीखा, क्योंकि मुझे लगता है कि विशेष परिस्थितियों को छोड़कर बच्चे प्रायः अपनी ख़ुशी और कमज़ोरी में एक-से ही होते हैं।

दीपक : आप जिन कक्षाओं में पढ़ाती हैं, उनमें बच्चों के सीखने के बारे में आप कितनी आश्वस्त हैं? क्या आपकी कक्षाओं में बच्चे स्तरानुसार सीख पा रहे हैं?

अर्चना : जब तक बच्चे मेरे कहने के बाद स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर लेते, तब तक मुझे लगता है कि उनपर लगातार कार्य करते रहना है। जब विद्यार्थी स्वयं से चिन्तन करके मुझसे अलग कुछ नया सोचते हैं, और मौखिक या लिखित रूप में दर्ज करवाने लगते हैं तब मैं अपने सिखाने को शाबाशी दे लेती हूँ। मेरा प्रयास यही रहता है कि बच्चे अपने स्तरानुसार सीखें। जो बच्चे सीख गए हैं उनका कठिनाई स्तर बढ़ाकर, और जो नहीं सीखे हैं उनपर नियमित रूप से कार्य करती रहती हूँ। अपनी मेहनत पर इतना विश्वास कर सकती हूँ कि आज नहीं तो कल, बच्चे मेरी मेहनत, लगन और उनके प्रति मेरी चिन्ता को समझेंगे। अगर मेरी कक्षा में वह कहीं कमज़ोर भी रह गए तो भी सीखने, आगे बढ़ने की प्रेरणा उन्हें कहीं रुकने नहीं देगी।

दीपक : विद्यालय में पुस्तकालय या रीडिंग कॉर्नर को लेकर आपकी राय क्या है? क्या इससे पढ़ने-लिखने की कोई संस्कृति बनती दिखती है?

अर्चना : विद्यालय में, कक्षा में रीडिंग कॉर्नर का होना निश्चित ही पढ़ने-लिखने को प्रोत्साहन देता है। बचपन से मैंने अपने घर में ही कई पुस्तकें, *सरिता, चंपक, नंदन,* और कई

उपन्यास आते देखे थे, क्योंकि मेरी माँ को भी पढ़ने का बहुत शौक़ था। मैं वहीं से पढ़ने के इस आनन्द को जान गई थी। अपने विद्यार्थी जीवन में भी मैं पुस्तकालय को सबसे अच्छी जगह मानती थी। विद्यालय के नाम पर मुझे सबसे अच्छा स्थान पुस्तकालय, और सबसे अच्छा पुस्तकालय कालांश ही लगता था। तो निश्चित ही, पुस्तकालय या रीडिंग कॉर्नर दरअसल वह जगह होती है जहाँ आप अनौपचारिक रूप से ख़ुद ही बहुत कुछ सीख सकते हैं। जिन बच्चों को पढ़ना नहीं आता, वे भी कहानी-कविताएँ सुनना-सुनाना पसन्द करते हैं। चित्र देखकर कहानी का अन्दाज़ा लगाते-लगाते वे कहीं-न-कहीं सीखने की तैयारी कर रहे होते हैं, और यह तैयारी भविष्य में उनके शिक्षण में सहायक होती है।

दीपक : अर्चनाजी, आपके शैक्षिक कार्यों और विचारों पर आपसे बहुत अच्छी बातचीत हुई। इस बातचीत में शामिल होने व समय देने के लिए बहुत शुक्रिया।

अर्चना अरोड़ा ने व्यावसायिक प्रशासन और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर किया है। वे शिक्षा में भी स्नातक हैं। वर्तमान में महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, ग्वार ब्रह्मणान, सांगानेर, राजस्थान में शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। विगत 19 वर्ष से अध्यापन कर रही हैं। पढ़ना, पढ़ाना और विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने में विशेष रुचि है।

सम्पर्क : archanarorajpr@gmail.com

दीपक कुमार राय अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जयपुर, राजस्थान में 2019 से रिसोर्स पर्सन के रूप में काम कर रहे हैं। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर, और डीफ़िल डिग्री लेने के बाद उच्च शिक्षा में प्राध्यापक के रूप में अध्ययन-अध्यापन से जुड़े रहे। आपने 'दिगंतर' में एसोसिएट फ़ेलो के रूप में शैक्षणिक शोध से जुड़ी गतिविधियों में भागीदारी की है। आपकी इतिहास, साहित्य, विचार और वैचारिकी पर केन्द्रित लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपने बिहार प्रगतिशील लेखक संघ की पत्रिका *रोशनाई*, साप्ताहिक समाचार पत्र *गणादेश, प्रतिश्रुति, आवाज़ जन मन की, संघतिया* आदि पत्रिकाओं के सम्पादन सहित *सैद्धान्तिकी* और *मतादर्श* नामक दो शोध पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया है।

सम्पर्क : deepak.rai@azimpremjifoundation.org

ऑनलाइन

बच्चों को पाठक बनाना : शिक्षकों से उपजे अनुभव

कमलेश चंद्र जोशी

इस लेख में कमलेश जोशी बच्चों में पढ़ने की ललक पैदा करने, और उन्हें उत्साही पाठक बनाने के बारे में बात करते हैं। इसके लिए वे ऐसे शिक्षकों से उनके अनुभव जानते हैं जिन्हें किताबों और पुस्तकालय के महत्त्व पर भरोसा हो, और उन्होंने बच्चों को उत्साही पाठक बनाने के लिए प्रयास किए हों। इस तरह के प्रयास करने वाले शिक्षक उन्हें बताते हैं कि शिक्षकों की पहल से ही बच्चे पाठक बनते हैं। इसके लिए ज़रूरी है शिक्षक ख़ुद भी ढेर सारी किताबें पढ़ें, और उनपर अपनी समझ बनाएँ। किताबों से बच्चों में भाषाई कौशलों और व्यक्तित्व का विकास होता है। बच्चों को अच्छा पाठक बनाने के लिए स्कूल में पढ़ने-लिखने का माहौल होना निहायत ज़रूरी है। स्कूल में अच्छा पुस्तकालय हो, और बच्चे नियमित रूप से पुस्तकालय का उपयोग करें। शिक्षकों ने यह भी बताया कि वे बच्चों में कैसे पढ़ने की रुचि बनाते हैं, उन्हें नियमित रूप से तरह-तरह की किताबें पढ़ने और लिखने के मौक़े देते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं, और उनपर बातचीत करते हैं।

https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/4782/